साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

वास्तविकता स्वीकार करो

डॉ. राम प्रकाश सक्सेना

दुंदूपुरा नाम का एक गाँव है। पूरे गाँव में एक विशिष्ट जाति के लोग रहते हैं। इनका खानदानी पेशा चोरी और डकैती था, महिलाएँ वेश्यावृत्ति करती थीं। अंग्रेज़ों ने इन्हें अपराधी जाति के रूप में अनुसूचित किया था। आज़ादी के बाद सरकार ने इन्हें अनुसूचित जातियों में सम्मलित कर लिया, जिससे उन्हें आरक्षण का लाभ मिल सके। गाँव में एक स्कूल भी खोल दिया। अपनी परंपरा से बँधे, शिक्षा की कमी और वर्षों से अलग संस्कारों के कारण कुछ ही लोग शिक्षा व आरक्षण का लाभ उठा पाते हैं। इन्हीं भाग्यशालियों में बादल सिंह के पुत्र सुंदर सिंह ने आरक्षण का लाभ उठाते हुए व अपनी मेहनत और लग्न से बी.ए. पास कर लिया। इस के बाद सेना की परीक्षा पास कर सेना में भर्ती हो गया। सेना में भर्ती होते ही गाँव में उसके माँ -बाप का रुतवा भी बढ़ गया। उसने अपने पिता को हर महीने कुछ रुपए भेजने शुरू कर दिए। बादल सिंह ने गाँव में एक परचून की दुकान खोल ली। इस कारण बादल सिंह की माली हालत बहुत अच्छी हो गई। वे गाँव के सरपंच भी चुन लिए गए।

सुंदर सिंह ने अपने समाज के लोगों को कई बार समझाने की कोशिश की कि वे अपना पारंपरिक धंधा छोड़ दें।गाँव वालों का तर्क होता कि हमारे पास ज़मीन तो है नहीं कि हम खेती कर सकें। हमें कोई हुनर भी नहीं आता, जिस से हम लोग अपना गुजारा कर सकें। अंग्रेज़ी सरकार ने हमारे ऊपर अपराधी जाति का जो ठप्पा लगा दिया था, वह कागज़ पर तो हमारी सरकार ने हटा दिया, लेकिन जब भी कहीं चोरी-डकैती होती है, तब पुलिस वाले हमें ही पकड़कर ले जाते हैं, हमारे घर की तलाशी भी होती है। हमारे घर में कुछ न मिलने पर भी दरोगा जी किसी-न-किसी आदमी को पकड़कर ले जाते हैं और कह जाते हैं कि अपनी कोई औरत थाने भेज देना

और हम उस आदमी को छोड़ देंगे| हम कहते रहते हैं कि जब हमने कोई अपराध ही नहीं किया, तो हम को क्यों पकड़ा जा रहा है|

दरोगा जी कहते हैं कि सबूत बनाना हमारे बाएँ हाथ का खेल है|तुम्हारे घर में कोई चार चीज़े लाकर रखेंगे और बस...| वैसे भी तुम्हारी औरतें वेश्यावृत्ति तो करती ही हैं| एक रात थाने में रह जाएगी , तो तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा|

"देश आज़ाद ज़रूर हुआ है , लेकिन हमें तो अभी भी पुलिस राज में रहना पड़ता है| अब हमने इसे अपना भाग्य मान लिया है|" उनके तर्कों से सुंदर सिंह मन मसोस कर रह जाता|

इस बार सुंदर सिंह एक महीने की छुट्टी पर अपने गाँव लौटा| उसने अपने गाँव के सब बच्चों को स्कूल में भर्ती कराने के लिए प्रेरित किया| अब तो मिड-डे मील (दोपहर का भोजन) भी मिलता है| इसी दौरान सुंदर सिंह की मुलाक़ात वहाँ की लीला नाम की टीचर से हो गई| लीला उसी गाँव की ही लड़की थी, उसने इंटर की परीक्षा परीक्षा पास कर ली थी| वह भी सुंदर सिंह की तरह गाँव में परिवर्तन लाना चाहती थी| कुछ मुलाकातों के बाद एक दूसरे के प्रति आकर्षण बढ़ता गया| विचारों की समानता के कारण यह आकर्षण धीरे-धीरे प्यार में बदलने लगा| बात शादी तक पहुँच गई| सुंदर सिंह छुट्टी समाप्त होने के पहले ही शादी करना चाहता था| अब बात दोनों के घरों तक पहुँची| लीला का पिता बेहद लालची था, इसलिए उसने दहेज में एक मोटी रकम की माँग की| इतनी बड़ी रकम सुंदर सिंह का परिवार देने में असमर्थ था|

जब शादी की बात नहीं बनी, तो दोनों ने तय किया कि वे शहर जाकर कोर्ट मैरिज कर लेंगे| दोनों ही वयस्क थे, इसलिए शादी में कोई कानूनी बाधा नहीं थी| उस समय सुंदर सिंह की पोस्टिंग बरेली में थी| दोनों ही रात के अँधेरे में बरेली तक पहुँच गए| सुंदरसिंह ने दोस्तों की सहायता से कोर्ट मैरिज कर ली|

समय अपनी गति से बीतता गया | दोनों ख़ुशी-ख़ुशी जीवन बिताने लगे| दुख केवल इतना था कि शादी के दो दशक बाद भी संतान सुख प्राप्त न हो सका|डॉक्टरी सलाह व् अन्य कई

इलाजो के बाद भी वे इस सुख से वंचित रहे| इस दुख में एक दुख और जुड़ गया| अपनी योग्यता व कर्मठता के कारण सेकंड लेफ्टिनेंट से मेजर तक के प्रमोशन अपने आप होते गए| अगला प्रमोशन मुश्किल लगने लगा, क्योंकि इनका कमांडिग ऑफिसर लालची और लंपट था| सुंदर सिंह समझ नहीं पा रहे थे कि वे अपने कमांडिंग ऑफिसर को कैसे खुश किया जाए|

एक बार कैंटीन में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया| उसमें लीला ने भी एक फ़िल्मी गाना गाया था| गाना इतना मधुर था कि सभी श्रोताओं की नज़र लीला पर केंद्रित हो गई| लीला सुंदर तो थी ही, साथ में उसका पहनावा भी देखने लायक था| बच्चा न होने के कारण उसकी उम्र भी दस साल कम लगती थी| उनके कमांडिंग ऑफिसर की नज़र लीला पर पड़ गई| वे शिष्टाचार का ध्यान न रखते हुए लीला से काफ़ी देर बात करते रहे| जाते-जाते उन्होंने सुंदरसिंह से कहा, "आप दोनों इस संडे को मेरे बंगले पर हमारे साथ डिनर कीजिए|"

रविवार को करीब 6 बजे, सुंदर सिंह अपनी पत्नी के साथ कर्नल साहब के बंगले पर पहुँच गए|

थोड़ी देर इधर-उधर की बातचीत होती रही| फिर लीला ने कर्नल साहब से पूछा, "मैडम कहाँ हैं?"

कर्नल साहब ने कहा, "वह कल ही अपने मायके चली गईं , उनके पिता की तबियत ख़राब हो गई| कोई बात नहीं है| कुक खाना बना रहा है| हम लोग 8 बजे डिनर कर लेंगे| तब तक कुछ ड्रिंक हो जाए|"

इतने में सहायक तीन गिलासों में ड्रिंक ले आया| उसने पहले कर्नल साहब, फिर सुंदर सिंह फिर लीला को ड्रिंक पेश की|

लीला ने कहा, "सॉरी, मैं ड्रिंक नहीं लेती|"

कर्नल साहब ने बेशर्मी से कहा, " सुना है कि आप की जाति में तो शराब और शबाब खूब चलता है|"

लीला ने तेज़ आवाज़ में कहा, " चलता होगा| हम लोग पढ़-लिखकर ऑनरेबल जीवन बिता रहे हैं।"

लीला के तेवर देखकर कर्नल साहब एकदम नम्र हो गए और कहने लगे, "सॉरी ! आई डोंट इंटेंड टू हर्ट यू|"

सुंदरसिंह ने माहौल बदला, " सर,कोई बात नहीं है| इंजॉय योर ड्रिंक |"

कर्नल साहब ने अपना टोन बदला और कहा, " आपकी वार्षिक रिपोर्ट की फ़ाइल अभी तक मेरे पास तक नहीं पहुँची?"

सुंदरसिंह, " सर, करीब 15 दिन पहले फ़ाइल आपके ऑफ़िस पहुँचाई जा चुकी है।|"

कर्नल, " ओह , इतने दिन हो गए , सॉरी| मैं आज ही अभी फ़ाइल पर साइन कर देता हूँ|"

सुंदरसिंह , " कोई बात नहीं है| अभी ऑफ़िस भी बंद है| आप कल साइन कर दीजिए|"

कर्नल , "मुझे कल शायद एक महीने के लिए बाहर जाना पड़े| मैं नहीं चाहता कि आपको और इंतज़ार करना पड़े|"

कर्नल ने तत्काल मोबाइल लगाया, "मिस्टर कुलकर्णी, मेजर **सुंदर सिंह** की वार्षिक रिपोर्ट अपने ऑफ़िस में पड़ी है। आप ऑफ़िस अभी जाइए, वह फ़ाइल मेजर सुंदरसिंह को दे दीजिए। मैं उन्हें अपनी कार से ऑफ़िस भेज रहा हूँ।"

कर्नल साहब ने अपने ड्राइवर को बुलाकर कहा, " सिंह को अपने ऑफ़िस ले जाओ।कुलकर्णी भी वहाँ पहुँच रहे हैं।

”

कर्नल साहब ने लीला की तरफ़ मुड़ते हुए कहा, “मैडम, आप यह हिंदी मैगज़ीन पढ़िए और मैं अभी अंदर से आता हूँ। सिंह अभी दस मिनट में वापस आ जाएँगे।” सिंह ड्राईवर के साथ ऑफ़िस चले गए। अंदर जाकर उन्होंने कुलकर्णी को फ़ोन लगाया,”कुलकर्णी मैं थोड़ा बिज़ी हूँ, आप फ़ाइल 8 बजे भिजवाइए।”

इतना कहकर वे फिर अपने ड्राइंग रूम में आ गए। जहाँ लीला बड़े ध्यान से हिंदी पत्रिका पढ़ रही थी।

कर्नल ने लीला से कहा कि आप यहाँ बोर हो रही होंगी। चलिए,मैं आपको अपना बंगला दिखा देता हूँ। यह वाक्य समाप्त होने से पहले ही कर्नल ने लीला का हाथ पकड़कर उठा लिया और बंगला दिखाने लगे । लीला अपना हाथ छुड़ाना चाह रही थी, लेकिन कर्नल की पकड़ इतनी मज़बूत थी कि वह ऐसा नहीं कर पाई। दूसरे, वह इतनी समझदार थी कि कर्नल को नाराज़ नहीं करना चाह रही थी, क्योंकि वह जानती थी कि कर्नल की नाराज़गी से उस के पति का करियर जुड़ा हुआ है।

कर्नल साहब घुमा-फिरा कर लीला को अपने बेड-रूम में ले आए। आप पढ़ी- लिखी हैं। आप समझ गई होंगी कि आपको मैं यहाँ क्यों ले आया हूँ। आपके पति का प्रमोशन, उसके साथ बहुत से लाभ, हाँ आपको कोई बच्चा भी नहीं हुआ, सोचिए , मैं पाँच मिनट में आता हूँ।”

पाँच मिनट बाद जब कर्नल साहब लौटे, तब लीला आँखे बंद किए हुए पलंग पर लेटी हुई थी।

कर्नल:”यू आर वेरी इंटेलिजेंट”।

लीला ने एक शब्द नहीं बोला।कर्नल साहब को जो करना था, वह कर लिया।

आठ बजे से पहले कर्नल व लीला अपने अपने स्थान बैठ गए। 8 बजे मेजर सिंह ने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया और कर्नल को फ़ाइल पकड़ा दी। कर्नल ने फ़ाइल के कागज़ों को इधर-उधर लौटा और अपने हस्ताक्षर कर दिए।

इसके बाद वह फ़ाइल कर्नल ने मेजर सिंह को पकड़ाते हुए कहा," लौटते समय यह साहब कुलकर्णी को ही देते जाना।"

इतना कहकर कर्नल साहब मुस्कराए और गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा," कान्ग्रेचुलेशन।"

" आइए, अब हम लोग डिनर करते हैं।"

डिनर करते समय कर्नल व लीला दोनों ही असहज लगे। मेजर सिंह समझ गए कि कुछ दाल में काला ज़रूर है, पर जानते हुए भी अनजान बने रहने में समझदारी लगी।

डिनर के बाद मेजर सिंह ने कुलकर्णी को फ़ाइल लौटाते हुए घर लौटने लगे। दोनों ही असहज ख़ामोश थे। लीला ने चुप्पी तोड़ी, "अब तो प्रमोशन मिल ही जाएगा। आप को तो खुश होना चाहिए। मेजर सिंह ने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा, " किस कास्ट पर ?"

लीला ने उत्तर " जीवन में कुछ पाने लिए मूल्य तो चुकाना ही पड़ता है।"

मेजर साहब ने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि उत्तर तो दोनों ही जानते थे।

कुछ दिनों तक घर में श्मशान सी शांति छाई रही।

कुछ दिनों के बाद, एक शाम जब सुंदर सिंह ऑफिस से अपने घर लौटा तब बेल बजाने पर भी दरवाज़ा नहीं खुला। तब उसने दूसरी चाबी से घर को खोला। घुसते ही उसने लीला, लीला कहकर चिल्लाया। कुछ उत्तर न मिलने पर घर में कोने-कोने में जाकर लीला की तलाश की। लीला का कोई अता -पता न मिला। फिर ड्राइंग रूम में चुप-चाप आकर बैठ गया। फ़ोन बंद था। थोड़ी देर

के बाद उसकी नज़र ड्राइंग-रूम के टेबल पर एक लिफ़ाफ़े पर पड़ी, उस पर उसका नाम लिखा था। उस ने अंदर खोलकर पत्र निकाला। उसमें लिखा था –

'प्रियवर

मैं तुम्हे बहुत प्यार करती हूँ। शायद तुम भी।

उस दिन कर्नल साहब के घर में डिनर के पहले क्या हुआ था यह मैं साफ़-साफ़ अपने मुँह से कहने का साहस नहीं जुटा पाई। लेकिन समझ तो आप भी गए होंगे।

तुम्हारे साथ मुलाकात के बाद अपने गाँव की परंपरा के विरुद्ध हमने इस आशा से घर छोड़ा था कि अब हम लोग एक नई ज़िंदगी बसाएँगे। इस बात एक गाने के माध्यम से समझ सकते है-

घर से चले थे हम ख़ुशी की तलाश में

गम सामने खड़े थे, वह साथ हो लिए।

यहाँ पर रहकर मैं सामान्य जीवन नहीं बिता पा रहीं हूँ , क्योंकि कर्नल साहब के घर की घटना हमेशा दिमाग में मंडराती रहती है। इसलिए मैं बिना बताए अपने गाँव जा रहीं हूँ। एक नए तरह की ज़िंदगी बिताने। मेरा निर्णय अटल है। कुछ दिनों तक मुझे शांति से रहने देना। उसके बाद क्या होता है मैं बता नहीं सकती।

आपकी

लीला

सुंदर सिंह ने पत्र को कई बार पढ़ा। कुछ दिनों तक असामान्य रहें।

सुंदरसिंह नैतिक दृष्टि से इतने गिर चुके थे कि उनकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि वह गॉव जाकर लीला को बुला लाएँ। अब उन्होंने अकेले ही जीवन काटने का मन बना लिया था। आखिर और चारा ही क्या था ?

लगभग 9 महीने बाद लीला का एक पत्र आया। पत्र के ऊपर लीला का नाम देखकर सुंदर सिंह ख़ुशी से पागल हो गए। पत्र खोलकर पढने लगे—

प्रियवर

आशा है कि तुम सकुशल होगे मैं भी खुश हूँ। मैंने यहाँ एक एडल्ट एजुकेशन का काम शुरू कर दिया है। गौंव की सभी औरतों को अपने घर की चौपाल पर क्लास लेना शुरू कर दिया है। मेरे काफ़ी समझाने पर सभी महिलाओं ने वेश्यावृत्ति छोड़ दी है। लगभग सभी पुरुष चोरी-डकैती छोड़कर मजदूरी करने लगे हैं।

एक खबर और। मैंने पिछले सप्ताह एक पुत्र को जन्म दिया है। ईश्वर की कृपा है उसकी शकल कर्नल से मिलती जुलती है। आप भी जानते हैं कि जब तक आप का ट्रान्सफर किसी अन्य यूनिट में नहीं हो जाता मैं वहाँ नहीं आ सकती। शायद आप भी ऐसा सोचते होंगे।

पुत्र का नाम पंचायत के जन्म रजिस्टर में लिखा दिया है- मनोज सिंह पुत्र सुंदर सिंह।

सुंदर सिंह ने पत्र को कई बार पढ़ा। पत्र पढ़कर वह यह नहीं समझ पा रहा था कि वह पुत्र के जन्म की बात पर खुश हो या...।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें